प्रयोजनमूलक हिन्दी में अनुसंधान की संभावनाएँ।

डॉ व्ही.सी ठाकुर

प्रयोजन मूलक हिंदी के चार उदेश्य है। हिंदी को व्यावहारिक उपयोगिता से परिचित कराना स्वयं रोजगार उपल्बध कराना में युवाओं की मदद करना अनुवाद कार्य को प्रोत्साहित करना एवं कार्यालयी हिंदी का समग्र ज्ञान प्रदान करना। वह हिंदी जिसका प्रयोग प्रयोजन विशेष के लिए किया जाए। इस हिंदी के माध्यम से ज्ञान विशेष की प्राप्ति और विशिष्ट सेवात्मक क्षेत्रों में कौशल्य, निपुणता, इसका लक्ष्य सेवा माध्यम होता है, जो जीविकोपार्जजका साधन बनाता है। डॉ.अर्जुन चव्हाण ने प्रयोजन मूलक हिंदी के निम्नलिखित उदेश्य भी बताए

1. हिंदी की व्यावरिक उपयोगिता से परिचित कराना।
2. स्वयं रोजगार उपलब्ध कराने में युवकों की मदद करना।
3. विविध सेवा क्षेत्रों में युवक-युवतियों को सेवा के अवसर उपलब्ध करा देना।
4. रोजी-रोटी की समस्या हल करने में छात्र सक्षम हो इस दृष्टि से उसका पाठक्रम तैयार करना।
5. अनुवाद कार्य को बढावा देना तथा इसके जरिए सफल अनुवाद तैयार करना।

कार्यालयो में प्रयुक्त होने वाली हिंदी भाषा का समग्र शान प्रदान करना। इसका क्षेत्र व्यापक है इस लिए उसमें अनुसंधान की संभाभावनाएँ अपार है। ज्ञान-विज्ञान,सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी साहित्य के पारंपारिक अध्ययन का महत्व कम होकर प्रयोजन मुलक हिंदी का महत्व बढने लगा है। वैश्वीकरण के इस युग में भाषा को रोजगार मूलक होना जरूरी है। आज देश-विदेश में भाषा स्तरपर होना जरूरी है। आज देश-विदेश में भाषा स्तरपर निरंतर परिवर्तन होने लगे है। जिस पर वर्तमान निरंतर परिवर्तन होने लगे है। जिस पर वर्तमान और भविष्यकाल में अनुसंधान की जरूरत है। प्रयोजन मूलक हिंदी के प्रशासनिक हिंदी, विधी की हिंदी जनसंचार माध्यमों की हिंदी, विज्ञान एवं तकनीकी हिंदी, विज्ञापन की हिंदी आदी विविध रूपों का उसके प्रयुक्ति क्षेत्र के अनुसार अनुसंधान होना चाहिए। समय और परिस्थिती के अनुसार भाषा में परिवर्तन जरूरी है। अनुसंधान कार्य मेहनत, चिंतन और लगन से पूर्ण होता है। एक बार मन में गांठ बांध ली कि इसे करना ही है। तो उसे पुरा किया जा सकता है। बस इसपर गंभीरता से सोचने की और अंजाम तक नहीं आता तब तक हम हाथ-पैर नहीं चलाते वैसे ही साहित्कि अनुसंधान कार्य इतना उपझ चुका है कि उसके दुसरे पश को देखने की कोशिश भी नहीं कर रहा है। इससे साहित्यिक अनुसंधान केंद्रो पर प्रश्नचिन्ह बीसतीं सदी के अंतिम दौर में पूरे विश्व को भूमंडलीकरण ने प्रभावित किया है। वैसे यह अवधारणा अर्थकेंद्रीत है। बानारवाद, उपभोक्तावाद और सूचनातंज इसके आधार है। भूमंडलीकरण ने मानव जीवन के सभी आयामों को प्रभावित किया। इसको पूरे संसार पर परिणाम दृष्टिगोचर हो रहा है। इससे हित्य और भाषा भी अछूती नहीं रही। हिंदी का

रूप भी बदल रहा है वैश्वीकरण ने बाजार और उपभोक्ता संस्कृती की भाषा का नया रूप सामने लाया है। हिंदी भावना और संवेदना की भाषा तो है ही व बाजार की भाषा भी बन रही है। हिंदी की प्रकृती में परिवर्तन हो रहा है। मनोरंजन के नाम पर भाषा का फूहड रूप सामने आ रहा है। आज का समय तकनीक सम्पनता का समय हो गया है। इसलिए भाषा और साहित्य के जो अनुसंधान है। उन पर इस समय का प्रभाव आना स्वाभाविक ही है। विचारों की अभिव्याक्तिके लिए नयी विधाए भी आ रही है। नये तकनीकी यंज की मरम्मत के औजार भही नये ही होंगे। आज हम किसी भी साहित्य को उसका मूल्यांकन नहीं कर सकते। वैश्विक परिदृश्य के आधार पर लिख-पढे का आकलन आवश्यक हो गया है। जिज्ञासा मानव प्राणी की प्रकृती प्रदत्त विशेषता है। वह इतनी प्राकृतिक है कि भूख के बाद और क्रोध मोह से पहले जिज्ञासा को ही स्थान दिया जाना चाहिए। एक बालक भूख से रोना और अन्न प्राप्ति के संतोष के बाद अगर पहली क्रिया करता है तो वह जान लेने की (अपने दर्द-गिंद) क्या है, उससे यह परिचित हाने की किश करता है, फिर थोडा बडा होने साथ-साथ अपने घर और परिवेश को जानने की शिरा करता है। मानव की इस जिज्ञासा शक्ति ने कई ज्ञान शाखाओं को जन्म दिया है। साहित्य, धर्म, विज्ञान, कला, दर्शन आदि कई ज्ञान शाखओं को जन्म दिया है। अनुसंधान कर्ता विचारों पर आधारित अनुसंधान करता है। यानि कोई एक विचार सिध्द करने के लिए भिन्न-भिन्न तथ्यों या तत्वों कके आधार पर कोई परिणामसिध्द करता है। अनुसंधान की मूल प्रकृती तथा उसका मूलत: स्वरूप वैज्ञानिक ही रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान के अनेक आयाम है। भाषिक अनुसंधान भाषा की उत्पत्ति, भाषा का विकास और भाषा की आज की स्थिति को लेकर होता है। साहित्यिक अनंसंधान साहित्य के सभी अंगो को लेकर होता है। साहित्यिक अनुसंधान शाश्वत मुल्यों पर आधारित होने से यह शारूत मूल्शें के तथ्य को प्रतिष्पित करता है। अनुसंधान अस संकल्पना को स्पष्ट करते हुए एस.एन.गणेशन अपनी बात रखते है कि " अनुसंधान अथवा शोध उस प्रक्रिया या कार्य का नाम है जिनमें बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुध्दि से उसका अवलोकन-विश्लेषण करके नये तथ्यों या सिद्धातों का उद्घाटन किया जाता है।

भाषा अनुसंधान केवल भाषा का ही नही तो वह संस्कृतिका भी अनुसंधान करता है। अनुसंधान सत्य की खोज है और सहित्यिक अनुसंधान मे साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन सामाजिक सत्य को ढूंठना है सामाजिक यथार्थ में वस्तुनिष्ठाता का होना नितांत आवश्यक होता है। साहित्य के अनुसंधान में समाजशास्त्रीय अध्ययन एक सपाट बयानी होती है। सामाजिक यथार्थ साहित्य में कई बार वस्तुनिष्ठता से त्यक्ति सापेक्ष बन जाता है, और समस्याओं के प्रति लेखक स्वयं अपने अनुभव और गृहितकों के अनुसार देखता है। अनुसंधाता को चाहिए कि सामाजिक यथार्थ की सही जाँच करने के लिए वह समाजशास्त्रीय पध्दति का अवलंग करे ना कि सर्वमान्य प्रवृत्तियों का।

आज हिंदी भाषा का पठन-पाठन आवश्यक हो गया है कार्यालयों, जनसंचार माध्यमों, वाणिज्य तथा उद्योगों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी का स्वरूप समझने के लिए छात्र को भाषा की विभिन्न प्रयुक्तिओं से परिचित कराना आवश्यक है। भाविक अभिलक्षणों से छात्रों को परिचित कराया जाएगा, जिससे वे प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप हो एवे उसके व्यवहार में दक्ष हो सके। स्वतंत्रता के बाद

हिंदीभाषा के प्रयोजन मूलक रूप का संतोषपद विकास एवं विस्तार हुआ है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. प्रयोजन मूलक हिंदी - विनोद गोदर
2. प्रयोजन मूलक हिंदी के विविध आयाम - डॉ. माया सिंह
3. अनुसंधान प्रविधि: सिध्दांत और प्रक्रिया एवं गणेशन
4. साहित्यिक अनुसंधान के आयाम - डॉ. रविन्द्रकुमार जैन
5. शोध प्रविधि - डॉ.विजयमोहन शर्मा

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com